- उड़नपरी -

पुराने जमाने की कहानियाँ प्रसिद्ध है कि- ताली बजाने से वस्तु व व्यक्ति हाजिर हो जाते थे व परियाँ प्रत्यक्ष हो जाती थी। यह परियों की कहानी प्रसिद्ध है। **'' ऐसी उड़नपरी मुझे बनना है'' ऐसी उड़नपरी बनने के लिए मुझे क्या करना होगा ?**

1. आप ज्ञान और याद के बल से एक सेकण्ड में अर्थात इन ज्ञान और याद के पंखो के आधार से साकार लोक से निराकार लोक में पहुँच जाते हो।
2. आप उड़नपरी ताली बजाओ और एक सेकण्ड में जिस शक्ति की आवश्यकता हो और वह शक्ति स्वरूप मे आ जाये- ताली बजाना अर्थात संकल्प करना- आह्वान करना। तब कहेंगे समय व स्वयं (उड़नपरी) दोनों की रफ्तार समान है।

उड़नपरी माना ही सदा सफलता मूर्त

तीन वरदान सदा स्मृति में रखने से सदा के लिए सहज ही सफलतामूर्त बन जायेगे। निराकारी स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान है - कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान है- डबल लाइट भव- डबल लाइट अर्थात सर्व कर्म बन्धनों से हल्के, और लाइट अर्थात सदा प्रकाश स्वरूप में स्थित रहने वाले। इससे ही डबल ताजधारी बनेंगे। साकार स्वरूप का विशेष वरदान है- ''साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी''।

उड़नपरी माना ही बेगर टू प्रिन्स

जितना ही अधिकार उतना ही सर्व त्याग, ऐसे बेगर टू प्रिंस। सर्व त्यागी अर्थात समय के ऊपर संकल्प के ऊपर स्वभाव, संस्कार के ऊपर अधिकार प्राप्त करने वाले। जैसे चाहे वैसे अपने समय, स्वभाव, और संस्कार को परिवर्तन कर सके अर्थात जैसा समय वैसा अपना स्वरूप व स्थिति धारण कर सके। नॉलेज से ही अधिकार प्राप्त होता है। समझ कम तो अधिकार भी कम, कर्मातीत अर्थात सदा सफलता मूर्त। समय, संकल्प, सम्पर्क और सम्बन्ध भी सदा सफल। सब बातो में सदा सफलता मूर्त बनने के लिए चाहिये परखने की शक्ति।

उड़नपरी माना ही परखशक्ति सम्पन्न

1. विध्नों को पहले से ही जानकर, उन द्वारा वार होने से पहले ही उन्हे समाप्त कर देना ''व्यर्थ जाने वाले समय व शक्ति को समर्थ में जमा कर देना। ''
2. हर आत्मा की मुख्य इच्छा और उसका मुख्य संस्कार जानने के कारण ''उसी प्रमाण उस आत्मा को वही प्रप्ति कराने के कारण सेवा में भी सदा सफल रहते है।''
3. हर एक आत्मा के संस्कार व स्वभाव को जानते हुए, '' उसी प्रमाण उसे सन्तुष्ट रखेंगे''।
4. किस समय कैसा वातावरण व वायुमण्डल है और क्या होना चाहिये- इसको परखने के कारण ''समय प्रमाण ही स्वयं को भी और अन्य आत्माओ को भी तीव्रगति में ला सकेंगे समय प्रमाण नॉलेजफुल, लाफुल या लवफुल भी बन और बना सकेंगे।

उड़नपरी माना ही प्रकृतिजीत परिस्थितिजीत

सफलतामूर्त के सामने प्रकृति व परिस्थति भी दासी बन जाती है। अर्थात '' वे प्रकृति और परिस्थिति के ऊपर सदा विजयी बनते है।'' वे प्रकृति व परिस्थिति के वशीभूत नहीं होते। ऐसे विजयी को ही सदा सफलतामूर्त कहा जाता है।

उड़नपरी माना ही व्यक्त से अव्यक्त बनाने वाले

'' एक ही संकल्प एक ही लगन'' जब सर्व शक्तिवान बाप का आह्वान स्नेह और दृढ़ संकल्प से कर सकते हो। तो क्या स्वयं में जिस भी शक्ति की कमी या कमजोरी महसूस करते हो उस शक्ति का अपने में आह्वान नहीं कर सकते हो। ''जब बाप को अव्यक्त से व्यक्त बना सकते हो, केवल याद से- स्नेह के बल से- अधिकार प्राप्त होने के बल से और समीप सम्बन्ध के बल से। तो ऐसे ही हर शक्ति को वा स्वयं को भी व्यक्त से अव्यकत बना सकते हो। '' संगम युग पर सर्व शक्तियां अपने अधिकार में चाहिये। स्वयं के शस्त्र समान शक्तियां हो। जो जब चाहो कर्तव्य में ला सको।

उडनपरी माना ही निर्मान बन विश्व नव निर्माण के निमित्त

निर्मान भाव, निमित्त भाव, बेहद का भाव यही सेवा की सफलता का विशेष आधार है। लेकिन जितना स्वमान उतना ही फिर निर्माण। स्वमान का अभिमान नही- ऐसे नही हम तो ऊँच बन गये, दूसरे छोटे है। या उनके प्रति घृणा भाव हो, यह नहीं होना चाहिये। '' कैसी भी आत्माए हो लेकिन रहम की दृष्टि से देखो अभिमान की दृष्टि से नहीं। न अभिमान न अपमान।'' अभी ब्राह्मण जीवन की यह चाल नही होनी चाहिये। यदि अभिमान नहीं होगा तो अपमान-अपमान नहीं लगेंगा। वह सदा निर्माण रहेगा। और निर्माण के कार्य में बिजी रहेगा। सेवा में सदा और सहज सफलता प्राप्त करने का मूल आधार है -'' निर्माण चित्त बनना।'' निर्मान बनना ही स्वमान है और सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है। निर्माण बनना झुकना नही है लेकिन सर्व को अपने विशेषता और प्यार में झुकाना है। महानता की निशानी निर्माणता है। जितना निर्माण उतना सबके दिल में महान स्वत: ही बनेंगे। निर्मानता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्मानता का बीज महानता का फल स्वत: ही प्राप्त कराता है। निर्माणनता सबके दिल की दुआएं प्राप्त करने का सहज साधन है। ''वृत्ति, दृष्टि, वाणी, सम्बन्ध सम्पर्क सब में निर्माणता का गुण धारण करो तो महान बन जायेंगे। जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है ऐसे निर्माण बनना अर्थात झुकना ही सेवाधारी बनना है। इसलिए एक तरफ महानता हो तो दूसरे तरफ निर्मानता हो।

जो निर्मान रहता है वह सर्व द्वारा मान पाता है। स्वयं निर्मान बनेंगे तो दूसरे मान देंगे। जो अभिमान में रहता है उसको कोई मान नही देते, उससे दूर भागेंगे। ''जो निर्मान होते है वह सबको सुख देते हैं। जहाँ भी जायेंगे, जो भी करेंगे वही सुखदायी होगा। उनके सम्बन्ध सम्पर्क में जो भी आयेगा वह सुख की अनुभूति करेगा।'' सेवाधारी की विशेषता है- एक ज्ञान की अर्थारिटी। जितना ही निर्मान उतना ही बेपरवाह बादशाह। '' निर्मान और अथार्टी दोनो का बैलेन्स''

उड़नपरी माना ही '' शुभ भावना शुभ कामना से सम्पन्न''

शुभ भावना -शुभ कामना का बीज ही है निमित्त भाव- निर्माण भाव। हद का मान नही लेकिन निर्मान। असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्मान। निर्मान होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करना ही सभ्यता वा सत्यता है, नम्रचित, निर्मान वा हाँ जी का पाठ पढ़ने वाली आत्मा के प्रति कभी मिसअण्डर स्टैण्डिग से दूसरों को हार का रूप दिखाई देता है। लेकिन वास्तविक विजय उसकी है। सिर्फ उस समय दूसरों के कहने वा वायुमण्डल में शक्य का रूप न बने। पता नहीं हार है या जीत। यह शक्य न रख अपने निश्चय में पक्का रहे। तो आज किसको दूसरे लोग हार कहते है, कल वाह-वाह के पुष्प चढ़ायेंगे।

संस्कारो में निर्मान और निर्माण दोनों विशेषताए मालिक पन की निशानी हैं। साथ-साथ सर्व आत्माओं के सम्पर्क में आना, स्नेही बनना, सर्व के दिलो के स्नेह की आर्शीवाद अर्थात ''शुभ भावना सबके अन्दर से उस आत्मा के प्रति निकले। चाहे जाने-चाहे न जाने दूर का सम्बन्ध वा सम्पर्क हो। लेकिन जो भी देखे वह स्नेह के कारण ऐसे ही अनुभव करे कि यह हमारा है। '' तो जितना ही गुणों की धारणा से सम्पन्न, गुणों रुपी फल स्वरूप बनो उतना ही निर्मान बनो, निर्मान स्थिति द्वारा हर गुण को प्रत्यक्ष करो तब कहेंगे- धर्म सत्ता वाली महान आत्मा।

उड़नपरी माना ही परोपकारी

ब्रह्मा बाप ने अपने को कितना नीचे किया, इतना निर्मान होकर सेवाधारी बने जो बच्चो के पॉव दबाने को भी तैयार। बच्चे मेरे से आगे हैं। बच्चे मेरे से भी अच्छा भाषण कर सकते है, पहले मैं कभी नही कहा। आगे बच्चे पहले बच्चे।, बड़े बच्चे कहा, तो स्वयं को नीचे करना नीचे होना नहीं है। ऊँचा जाना है। तो इसको कहा जाता है सच्चे नम्बरवन योग्य सेवाधारी। '' दूसरे को मान देकर के स्वयं निर्मान बनना यही परोपकार है।'' यह देना ही सदा के लिए लेना है। अल्प काल के विनाशी मान का त्याग कर स्वमान में स्थित हो, निर्मान वन सम्मान देते चलो। यह देना ही लेना बन जाता है। '' सम्मान देना अर्थात उस आत्मा को उमंग उत्साह में लाकर आगे करना है। यह सदाकाल का उमंग उत्साह अर्थात खुशी का वा स्वयं के सहयोग का खजाना, आत्मा को सदा काल के लिए पुण्य आत्मा बना देता है।''

सार

01-07-2012 को चली अव्यक्त बाप दादा की मुरली मेरे लिए अति महत्तवपूर्ण रही। इस मुरली में 29-01-75 व 30-01-75 की दो मुरलियां थी। इस मुरली से मुझे एक अति महत्तवपूर्ण शब्द मिला '' उड़नपरी''। मुझे अन्दर में लगा मुझे भी ऐसी उड़नपरी बनना है, जो ताली बजाओ तो सब हाजिर।

यह उड़नपरी शब्द वा टाईटल मुझे पसन्द आया। यह टाईटल मेरे लक्ष्य के भी मुझे अनुरूप लगा। मेरे अन्दर में रहता '' मेरा मन मोबाईल की तरह काम करे, मेरी बुद्धि कमप्यूटर की तरह काम करें। तथा मेरे संस्कार मुझे उड़ती कला की ओर ले जायें। इस सन्दर्भ में मेरी ये तीनो चाहत, ये स्वरूप '' उड़नपरी'' मुझे पूरा करने में सक्षम नजर आया। और मेरे मन ने, बुद्धि ने, मुझ आत्मा ने उड़नपरी बनने का लक्ष्य ले लिया। और अध्ययन करने पर पाया कि निम्न विशेषताए उड़नपरी में होगी, जिन्हें मुझे धारण करना है। **''उड़नपरी'' माना ही -**

1. बेगर टू प्रिन्स
2. सदा सफलतामूर्त
3. परखशक्ति सम्पन्न
4. प्रकृतिजीत, परिस्थितिजीत
5. व्यक्त से अव्यक्त बनाने वाले
6. निर्मान बन विश्व नव निर्माण के निमित्त
7. शुभ भावना शुभकामना से सम्पन्न
8. परोपकारी

ऐसी उड़नपरी मुझे भी बनना है।

मुझे भी बनना है।

मुझे भी बनना ----

मुझे भी --------

ओम शांति
बी.के सुधीर कुमार
शांतिवन
मो. 09414152254